

**अग्निवाहन** पुं. (तत्.) अग्निदेव की सवारी (या वाहन)।

**अग्निशमन** पुं. (तत्.) किसी भवन में लगी आग को बुझाना टि. प्रायः नगरों में प्रशासन की ओर से आग बुझाने के लिए 'अग्निशमन' उपकरण और अग्निशमन केंद्रों की व्यवस्था होती है।

**अग्निशामक** वि. (तत्.) लगी आग को बुझानेवाला यंत्र (उपकरण) या व्यक्ति।

**अग्निशाला** स्त्री. (तत्.) घर में यज्ञ के लिए निर्धारित स्थान जहाँ यज्ञाग्नि स्थापित की गई हो।

**अग्निशिखा** स्त्री. (तत्.) 1. अग्नि की ज्वाला, आग की लपट 2. प्रकाश के लिए जलाई गई आग "अग्निशिखा बुझ गई जागने पर जैसे सुख सपने" (कामायनी) 3. कलियारी का पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

**अग्निशुद्धि** स्त्री. (तत्.) 1. किसी द्रव्य के पात्र में आग डालकर उसे शुद्ध करना 2. आग में प्रवेश करके चरित्र की शुद्धता की परख, तथा इसी प्रकार आग में तपाकर सोने की शुद्धता की परख भी अग्निशुद्धि या अग्नि परीक्षा के अंतर्गत माने जाते हैं।

**अग्निशेखर** पुं. (तत्.) 1. अग्नि का मुकुट या आभूषण 2. सोना 3. केसर।

**अग्निष्टोम** पुं. (तत्.) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ जो वसंत ऋतु में पाँच दिन किया जाता है।

**अग्निसंस्कार** पुं. (तत्.) मृतशरीर (शव) का दाह-संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार 2. शुद्धता के लिए किसी वस्तु स्वर्ण आदि का अग्नि में तपाना।

**अग्निसह** वि. (तत्.) आग के ताप को सहने में सक्षम, अग्निरोधी। fireproof

**अग्निसह ईंट** स्त्री. (तत्.+तद्.) उच्च ताप को सहन करने में सक्षम ईंट।

**अग्निसाक्षिक** वि. (तत्.) आग को साक्षी करके किया गया काम, जिसकी साक्षी आग हो।

**अग्निसात्** वि. (तत्.) आग में जला हुआ या जलाया गया।

**अग्निसार** पुं. (तत्.) दे. रसांजन, आँखों की एक औषधि।

**अग्निसुत** पुं. (तत्.) शिव-पार्वती का पुत्र स्कंद या कार्तिकेय (शिव पार्वती को अग्निसम तेजोरूप माना गया है, अतः वे अग्निसुत हैं)।

**अग्निसेवन** पुं. (तत्.) आग का सेवन करना या आग तापना।

**अग्निहोत्र** पुं. (तत्.) नियमपूर्वक वैदिक मंत्रों से नित्य सुबह-शाम किया जाने वाला हवन।

**अग्नीध** पुं. (तत्.) 1. यज्ञ में अग्नि की रक्षा करने वाला ऋत्विक् 2. होम, हवन, 3. स्वायंभुव मनु का एक पुत्र।

**अग्नीय** वि. (तत्.) अग्नि संबंधी, अग्नि का।

**अग्न्यस्त्र** [अग्नि-अस्त्र] पुं. (तत्.) चलाने, छोड़ने पर अग्नि पैदा करने वाला अस्त्र (बाण); महाभारत युद्ध के संदर्भ में आधुनिक 'मिसाइल' का पर्याय, आग्नेय अस्त्र।

**अग्न्यागार** पुं. (तत्.) यज्ञाग्नि रखने का स्थान।

**अग्न्याधान** [अग्नि-आधान] पुं. (तत्.) 1. अग्नि रखना या स्थापित करना 2. आग जलाना या सुलगाना, मंत्र द्वारा यज्ञ की अग्नि को स्थापित करना।

**अग्न्याशय** [अग्नि-आशय] पुं. (तत्.) जठराग्नि का स्थान जहाँ भोजन पचता है, कशेरुकी प्राणियों की वृहद् कूपिका ग्रंथि जिससे पाचक प्रकिण्व और इन्सुलिन हॉर्मोन स्रवित होते हैं, पक्वाशय pancreas

**अग्न्युत्पात** पुं. (तत्.) 1. ऐसी आग का लगना या लगाना जिससे बहुत उत्पात या हानि हो; अग्निकांड 2. आकाश से उल्कापात।

**अग्यारी** स्त्री. (तद्.) दे. अगियारी, अगियार।

**अग्र** वि. (तत्.) 1. प्रथम 2. श्रेष्ठ, उत्तम 3. प्रधान, मुख्य 4. सिरा, नोक।

**अग्रकर** पुं. (तत्.) 1. हाथ का अगला हिस्सा। 2. दाहिना हाथ या हाथ की ऊंगली 3. सूर्य की पहली किरण।